दिसम्बर २०१७

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

सुपीरियारिटी और इन्फिरियारिटी का मूल वजह

बालमित्रों,

संपादकीय,

कॉम्प्लेक्सिटी अर्थात् ग्रंथि। यह ग्रंथि मनुष्य के स्वभाव में ही गुँथी हुई है। दो प्रकार की कॉम्प्लेक्सिटी होती है। सुपीरियर कॉम्प्लेक्सिटी और इन्फिरियर कॉम्प्लेक्सिटी। आप इन शब्दों से अन्जान नहीं हैं। लेकिन यह कॉम्प्लेक्सिटी स्वभाव के साथ मिलकर कैसे काम करती है, उससे आप अवश्य ही अन्जान होंगे।

तो आइए, इस अंक में इनकी रसप्रद बातों को पढ़कर, अपनी कॉम्प्लेक्सिटी को पहचानें। और इन दोनों कॉम्प्लेक्सिटी से बाहर निकलकर नॉर्मेलिटी की तरफ आगे बढ़ने का प्रयास करें।

MERRY CHRISTMAS

- डिम्पल मेहता

सुपीरियारिटी और इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स

ज्ञानी कहते हैं...

नीरू माँ : सुपीरियारिटी और इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स, ये दोनों कॉम्प्लेक्सिटी हैं, अर्थात् ग्रंथि। ये दोनों कॉम्प्लेक्सिटी व्यक्ति को उलझन में डालती रहती हैं। और भीतर चैन से नहीं रहने देतीं, शांति से नहीं रहने देतीं। दोनों कॉम्प्लेक्सिटी किसी न किसी तरह से भोगवटा देती ही रहती हैं।

प्रश्नकर्ता : बाहर, किसी के सामने कुछ नहीं बोलता। वहाँ इन्फिरियर लगता है। लेकिन घर में सभी के साथ बहुत दादागिरी करता है।

नीरू माँ : बाहर अपमान का डर लगता है। अच्छा दिखाना है। घर में तो ऐसी चिंता नहीं होती। बाहर अच्छा दिखाने के लिए प्रकृति को दबाकर रखता है, इसलिए घर में प्रकृति उछल जाती है। हमारी वजह से किसी को दुःख पहुँचे यह तो गलत ही हैं न?

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंक: ९
अखंड क्रमांक: ५७
दिसम्बर २०१७

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website:kids.dadabhagwan.org

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा लगता है कि मेरा फ्रेन्ड सुपीरियर है और मैं इन्फिरियर। अतः जब वह चिल्लाता है, तब मेरा दिमाग़ ही बंद हो जाता है। जितनी सूझ पड़ती है वह भी बंद हो जाती है। अतः इसमें से बाहर नहीं निकल पा रहा।

पूज्य श्री : हमें उसका जो पोइन्ट ऑफ व्यू है उसे समझना चाहिए। क्योंकि जब वह दस वाक्य बोलता है, तब दो वाक्यों में ही वह कहना चाहता है कि "तुम जल्दी टाइम से आ जाना।" वह आगे पीछे लंबा बोलता है, "पिछली बार भी देर से आया था, तेरी वजह से हमें भी देर हो गई थी। तब तक तो गेम ही पूरी हो गई थी, तेरी वजह से सभी का मज़ा मारा गया।"

"तू जल्दी आना", आपको बस इतना ही समझ लेना है। बाकी और सब मन पर नहीं लेना है। फिर आपको जल्दी पहुँचने का प्रयत्न करना चाहिए। यों धीरे-धीरे आपकी शक्ति बढ़ती जाएगी।

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड

पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ५० पाउन्ड

D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

यदि दो दोस्त
सुपीरियारिटी वाले
मिल जाएँ तो कोई
किसी की नहीं सुनता
और बात-बात में
झगड़ा ही
करते रहते हैं।

यह तो

यदि दो दोस्तों में
एक सुपीरियर और
एक इन्फिरियर हो
तो फ्रेन्डशीप ठीक
से टिकती है क्योंकि
इन्फिरियर वाला
सुपीरियर वाले की
सब बात
मानता रहता है।

यदि कुछ नुकसान हो जाए तो सुपीरियर वाला चला लेता है लेकिन वह अहंकार पर चोट बर्दास्त नहीं करता। किसी ने कोई अपमान कर दिया तो नहीं चलाता।

नई ही बात है !

सुपीरियर या इन्फिरियर दोनों में से कोई भी मुक्तता का अनुभव नहीं करता, जबकि नॉर्मल वाला मुक्तता का अनुभव करता है।

ढॉप पर अकेलापन

एक खूबसूरत राजकुमारी थी। उसका नाम मानिनी था। खूबसूरती के साथ ही वह चतुराई में भी बेजोड़ थी। राजा ने अपनी इस लाड़ली बेटी को एक राजकुमार की तरह सभी अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या का शिक्षण दिया था। राजकुमारी मानिनी बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थी। इसलिए किशोर अवस्था आने तक तो वह सभी प्रकार की विद्या में पारंगत हो गई थी।

तकलीफ एक ही बात की थी कि राजकुमारी मानिनी बहुत अभिमानी थी। वह सभी को अपने आगे नीचा समझती थी। बस इसी वजह से इतनी कुशाग्र और लायक होते हुए भी प्रजा में अपनी राजकुमारी के लिए गर्व की जगह अवमानना ही रहती थी।

प्रजा को राजा-रानी से बहुत प्रेम था। लेकिन ऐसे देवता समान राजा-रानी से कौन कहे कि उनकी बेटी घमंडी है।

एक बार राजा और मंत्री वेश बदलकर राज्य का हालचाल देखने नगर में गए। अचानक लोग अपने घर की तरफ भागने लगे। रास्ते के राहगीर जहाँ आश्रय मिला, वहाँ छुप गए। यह देखकर राजा को आश्चर्य हुआ, "यह क्या हुआ, लोगों में इतना डर क्यों फैल गया है?" मंत्री ने एक युवक से इसका कारण पूछा, तो उसने जवाब दिया, "आप भी कहीं छुप जाओ... सुना नहीं, राजकुमारी मानिनी घूमने निकली है।"

राजा ने कहा, "लेकिन उनके लिए मार्ग तो पूरा खुला हुआ है।"

सर्दी की मौसम में भी उस युवक को पसीना आ रहा था। "अरे! यदि भूल से भी राजकुमारी की नज़र में आ गए और उन्होंने कुछ पूछ लिया तो हमारा तो दोनों तरफ से नुकसान है। यदि नहीं जीते तो भरपूर अपमान होता है और यदि किस्मत से जीत गए तो राजकुमारी के गुस्से का भोग बनना पड़ता है। बेकार में स्पर्धा होती है और वह तभी खत्म होती है, जब राजकुमारी जीत

जाती है।" यह सुनकर राजा उदास हो गए।

इतने में तो घोड़े की टापें सुनाई दीं। वायुवेग से दौड़ते हुए घोड़े की लगाम अचानक से खींची, हिनहिनाहट के साथ घोड़ा रुक गया। घोड़े पर सवार राजकुमारी ने पीछे मुड़कर देखा, "कहाँ हो तुम दोनों?" इतने समय से मेरे साथ रहकर भी तेज घुड़सवारी नहीं आई। पीछे से दो सहेलियाँ हाँफती हुई आई, "आप तो श्रेष्ठ हो, आपके जैसा हमें कैसे आएगा।"

राजकुमारी ने आसपास नज़र घुमाई और रौब से आगे निकल गई। लोग धीरे-धीरे बाहर आने लगे और अपने काम में लग गए।

राजा ने लोगों की गपशप सुनी, "राजकुमारी को ऐसे लोग ही पसंद है, जो उनकी जी-हुजूरी करें और उनकी सभी बात माने।"

राजा ने निराश होकर मंत्री की तरफ देखा, "मैं तो प्रेम और प्रोत्साहन से राजकुमारी को समर्थ बनाना चाहता था। स्त्री होते हुए भी वह दुनिया में कहीं भी कमज़ोर न पड़े। लेकिन..." बोलते हुए उनका आवाज़ भारी हो गया। मंत्री ने राजा के कंधे पर हाथ रखकर आश्वासन दिया, "कुछ रास्ता ढूँढेंगे... महाराज आप चिंता मत कीजिए।"

एक दिन राजकुमारी कुछ सैनिकों और अपनी दो सहेलियों के साथ जंगल में शिकार के लिए निकली। स्वभाव के अनुसार स्पर्धा करने में उस दिन वह बहुत आगे निकल गई। जब उसे पता चला कि वह रास्ता भटक गई है, तो उसने मदद के लिए बहुत आवाज़ें लगाई। लेकिन सुनसान जंगल में उसकी मदद के लिए कोई नहीं था।

वापस लौटने का रास्ता ढूँढने के लिए वह बहुत भटकी। भूख, प्यास और थकान से उसका हाल बेहाल हो गया। अभी कोई भी होशियारी काम नहीं आ रही थी। रात हो गई थी। तभी उसे एक झोंपड़ी में लालटेन जलती हुई दिखी। झोंपड़ी में जाकर देखा तो एक वृद्ध शॉल ओढ़कर सो रहा था। राजकुमारी ज़ोर से बोली, "मैं भटक गई हूँ। मुझे बहुत भूख लगी है। कुछ खाना है?" उस वृद्ध ने कुछ जवाब नहीं दिया। राजकुमारी से सहन नहीं हुआ। वह और ज़ोर से बोली, "तुम्हें सुनाई नहीं देता? मुझे मदद की ज़रूरत है। क्या आपको पता नहीं है कि आपको कौन बुला रहा है।"

वृद्ध ने तुरंत जवाब दिया, "मुझे पता है कि आप राजकुमारी मानिनी हो। लेकिन यह मेरी झोंपड़ी है। और मदद माँगने का यह कोई तरीका नहीं है।"

राजकुमारी चौंक गई। कोई उससे उसकी ही भाषा में बात कर रहा था, जिसे सुनकर उसे अच्छा नहीं लगा। "यदि मदद माँगनी है तो विनती करके, आवाज़ को नरम करके मांगोगी तो कुछ सोचूँगा। वर्ना जैसे अंदर आई हो वैसे ही बाहर चली जाओ", वृद्ध ने कड़क शब्दों में कहा।

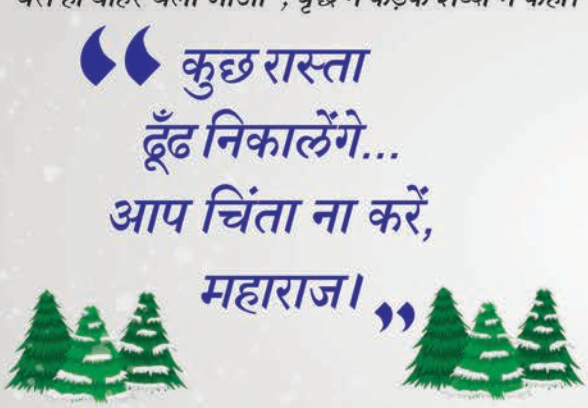

कुछ रास्ता ढूँढ निकालेंगे... आप चिंता ना करें, महाराज।"

राजकुमारी को वृद्ध का ऐसा व्यवहार विचित्र लगा, लेकिन वह भूख से परवश थी। इसलिए विनती करके कहा, "मेहरबानी करके मेरी मदद कीजिए। मैं बहुत थक गई हूँ। क्या मुझे कुछ खाने के लिए देंगे?"

वृद्ध ने एक मिट्टी के टूटे बर्तन में थोड़े फल और कटोरे में पानी दिया। राजकुमारी क्रोधित हो गई, "यह मेरे लायक है?" वृद्ध ने कुछ बोले बिना कटोरा वापस ले लिया। थोड़ी देर तक राजकुमारी देखती रही। फिर अपने आप लेकर खा लिया और आँखें बंद करके पानी पी लिया।

राजकुमारी की दूसरी फरमाइश, "रात हो गई है, मुझे बहुत थकान लग रही है। कल सुबह वापस लौटने का रास्ता ढूँढना है। मुझे सोना है। बिस्तर कहाँ है?"

"बाहर से सूखी घास लाकर, जहाँ बिछाकर सोना हो सो जाओ", वृद्ध ने झिड़क कर कहा।

राजकुमारी फिर से भड़क गई, "मैं ज़मीन पर? घास के बिस्तर पर? आपकी ऐसी गुस्ताखी का क्या परिणाम आएगा उसका डर नहीं है?"

वृद्ध ने शांति से जवाब दिया, "अभी तो आप अपनी चिंता करो। मैंने झोंपड़ी में आपको आश्रय दिया और खाने-पीने की मदद की, इतना मेरा उपकार मानो।" इतना कहकर वृद्ध शांति से सो गया।

अंत में राजकुमारी बाहर से घास लाकर उस पर सो गई, कब आँख लग गई उसे पता ही नहीं चला।

सुबह हो गई। राजकुमारी की आँख खुली। उसने आसपास नज़र घुमाई और झट से बैठ गई। पिछली रात की पूरी घटना उसे याद आ गई। वृद्ध के पास जाकर उसने कहा, "मुझे नगर की तरफ जाने का रास्ता बताइए। और हाँ कल आपने कहा था कि आप जानते हैं कि मैं राजकुमारी मानिनी हूँ लेकिन आपको यह कैसे पता चला?"

वृद्ध ने चिढ़कर कहा, "नगर जाने का कोई मतलब नहीं है। वहाँ आपकी किसी को ज़रूरत नहीं है। आपको अब इस जंगल में ही बाकी का जीवन बिताना है।"

राजकुमारी को अब शंका होने लगी कि यह वृद्ध पागल है। वह खड़ी होकर बाहर अपने घोड़े के पास गई।

वृद्ध ने कहा मैंने कल इस ओर से कुछ सिपाही और दो युवतियों को जाते देखा था। उनकी बातें भी सुनी थीं।

यह सुनकर राजकुमारी रुक गई, "हाँ, वे तो मेरी खास सहेलियाँ और मेरे पिता जी के सिपाही थे।" राजकुमारी की आँखों में चमक आ गई, "वे लोग किस तरफ गए हैं? वे लोग अभी तक मुझे ढूँढ रहे होंगे।"

वृद्ध ज़ोर से खिलखिलाकर हँसा, "ढूँढते होंगे? अरे! वे तो आपको यहाँ छोड़ने ही आए थे।" राजकुमारी बेकाबू हो गई। उसने म्यान में से तलवार निकाली और बोली, "पागलपन की वजह से आप जान गँवाएँगे।"

वृद्ध ने व्यंग किया, "आपने अपनी ज्यादा होशियारी की वजह से सबकुछ खो दिया।" राजकुमारी ने तीखे स्वर में पूछा, "क्या मतलब?"

वृद्ध ने विस्तार से पूरी बात बताई, "मैंने सिपाहियों की बातें सुनी थीं। सिपाही कह रहे थे कि, ऐसे लो कप्रिय राजा-रानी की राजकुमारी प्रजा में कितनी अप्रिय है। अच्छा हुआ कि

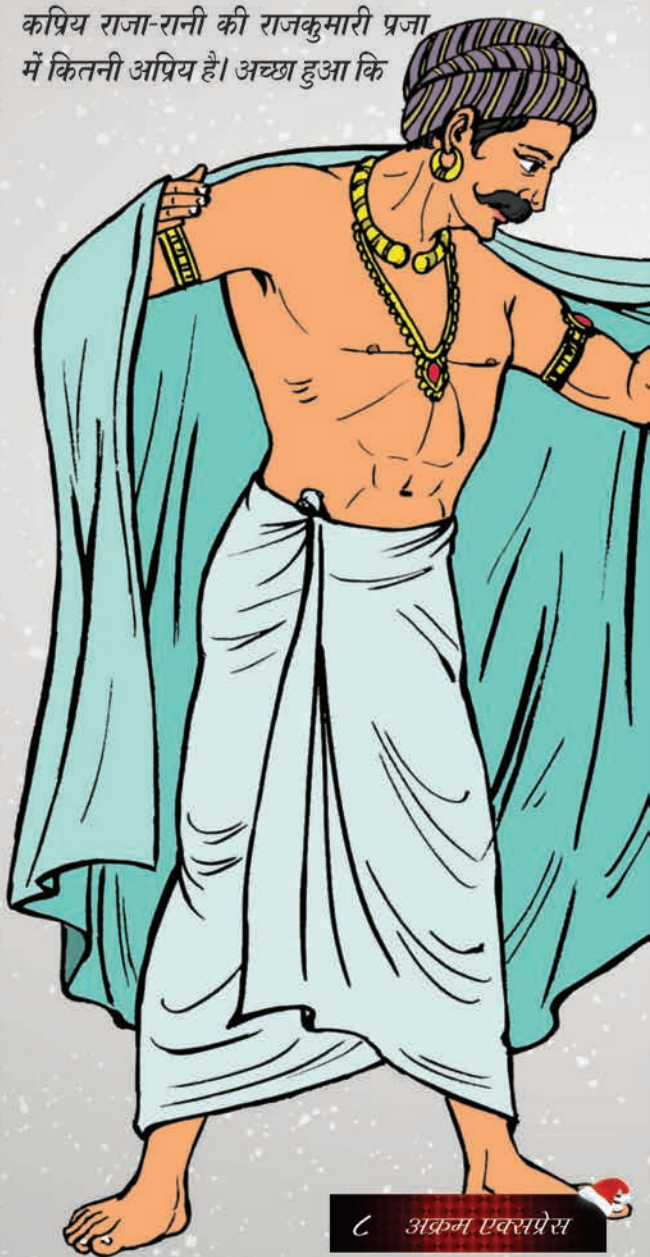

ऐसी राजकुमारी से पीछा छूटा। आपकी सहेलियाँ भी खुश थी कि आखिर में उन्हें आपकी दादागिरी और आपके द्वारा होने वाले अपमान से छुटकारा मिला।"

राजकुमारी के हाथ से तलवार छूट गई, "यह बात सही नहीं हो सकती।"

वृद्ध ने पूछा, "तो मुझे इन सब बातों का कैसे पता चला?" राजकुमारी की आँखों में अँधेरा छा गया और वह ज़मीन पर बैठ गई।

कुछ देर बाद वह स्वस्थ हुई। उसकी आँखों के सामने वे सभी चेहरे आने लगे, जिनका अपमान करके नीचा दिखाकर उसे थोड़ी सी भी झिझक महसूस नहीं हुई थी। सभी को उसके प्रति अत्यंत उपेक्षा है, यह जानकर उसे बहुत दुःख हुआ। आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। वृद्ध ने फटी हुई शॉल और नकली दाढ़ी निकाल कर फैंक दी और राजकुमारी के सिर पर हाथ फिराया।

"पिता जी, आप?", राजकुमारी ने हिचकी भरी।

"स्पर्धा में जीतकर लोगों से हार जाएँ तो वह होशियारी किस काम की?"

"हाँ, बेटा! प्रजा में तेरी अप्रियता देखकर मुझे यह सब नाटक करना पड़ा। लेकिन ऐसा करने से तेरी आँखें खुल गईं, इसकी मुझे खुशी है।"

राजकुमारी पिता से लिपट गई, "मुझे समझ में आ गया है, पिता जी। टॉप पर अकेले रहने से तो अपने लोगों के साथ ज़मीन पर रहना अच्छा।"

"बिटिया तेरी होशियारी पर मुझे गर्व है। लेकिन उसका लोगों के काम के लिए उपयोग करना, लोगों को नीचा दिखाने में नहीं, तभी लोगों का प्रेम संपादन होगा। यदि हम स्पर्धा में जीतकर लोगों से हार जाएँ तो वह होशियारी किस काम की?" पिता जी ने प्रेम से राजकुमारी के सिर पर हाथ रखकर कहा।

उसके बाद राजकुमारी ने अपनी होशियारी और कुशलता को लोक सेवा में लगाया और उसकी लोकप्रियता आकाश से भी ऊपर पहुँच गई। खुशी से राज किया।

"स्पर्धा में जीतकर लोगों से हार जाएँ तो वह होशियारी किस काम की?"

परम पूज्य दादा भगवान का ११० वाँ जन्म जयंती महोत्सव मनाया गया और उसमें बच्चों ने किया कल्चरल शो

चिल्ड्रन पार्क
की झलक

विश्वास! अपने आप पर

क्लास का पहला दिन था

तो आप इस साल क्या करोगे यह आपको पता नहीं है, राईट? मुझे भी कुछ पता नहीं है।

हा...हा...हा...हा

हमारा तो पहला दिन है इसलिए पता नहीं है, सर।

डोंट वरी। मेरा भी पहला ही दिन है।

फिर से क्लास में हास्य फैल गया।

उसी समय प्रिन्सिपल और एक टीचर लॉबी से गुज़रे।

मिस्टर बोज़ पढ़ाने के बदले बच्चों के साथ मस्ती कर रहे हैं।

यही तो उनकी खासियत है। वे बच्चों को उनकी भाषा में इस तरह सिखा देते हैं कि उन्हें पता ही नहीं चलता कि वे सीख रहे हैं।

ओ.के... चलो, आपको एक आपके ही समान छोटे बच्चे की बात बताता हूँ। उस बच्चे को पढ़ने-लिखने में बहुत तकलीफ पड़ती थी। उसे अक्षर समझ में नहीं आते थे। क्लास में पढ़ने में सब से पीछे... पता है वह कौन था?

सभी ध्यान से सुन रहे थे। पीछे कौने में बैठा हुआ अंश चौंक गया...और नीचे देखने लगा।

यह सर को पता है?

टीचर ने एक बड़ा फोटो ऊँचा किया।

ओह, अल्बर्ट आईन्स्टाईन...

हाँ।

अंश को "हाश" के साथ आश्चर्य हुआ। एक सेकन्ड के लिए टीचर और अंश की आँखें मिली...

आपको पता है कि लाईट के बल्ब की खोज किसने की?

थॉमस आलवा एडीसन

एक दिन थॉमस के टीचर ने थॉमस को एक चिट्ठी, उसकी मम्मी को देने के लिए कहा।

मम्मी, टीचर ने चिट्ठी में क्या लिखा है?

आपका पुत्र असाधारण प्रतिभा वाला है और हमारी पाठशाला उसके लिए बहुत छोटी है, हमारे टीचर उसके लिए पर्याप्त विद्वान नहीं है, अतः उसे स्वयं ही पढ़ाइए।

दोस्तों, कुछ सालों के बाद, उनकी मम्मी की मृत्यु के बाद, घर की पुरानी चीज़ों के बीच यह चिट्ठी थॉमस को मिली। चिट्ठी में लिखा था। आपका पुत्र मंदबुद्धि है। इसे अब पाठशाला में आने की अनुमति नहीं है।

पूरा क्लास स्तब्ध और भावुक हो गया।

उनके जैसे, और भी बहुत से व्यक्ति हैं। जैसे कि हेलन केलर, वाल्ट डिजनी, स्टीफन हॉकिंग। जानते हो, इन सभी व्यक्तियों में कॉमन चीज़ क्या थी?

इन सभी में कुछ ऐसी कमियाँ थीं जिससे लोगों ने उन्हें किसी लायक नहीं समझा था। लेकिन यदि इसी वजह से वे इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स में डूबकर हताश हो गए होते तो जगत् उनके योगदान से वंचित रह जाता।

जैसे उन व्यक्तियों ने आने वाली तकलीफों में हिम्मत और विश्वास के साथ सफलता प्राप्त की, वैसे ही आज हम सब तय करेंगे कि हताश या निराश हुए बगैर आनंद और उल्लास से पूरे साल पढ़ाई करेंगे। ठीक है न?

रिसेस की बेल बजी और बच्चे बाहर दौड़े। क्लास में सिर्फ टीचर और अंश थे।

एक और नाम मैंने नहीं लिया क्योंकि वह इतना बड़ा नाम नहीं है।

अंश कुछ कहने गया।

मेरा... मुझे भी अक्षर पढ़ने में तकलीफ होती थी। लेकिन देखो आज जैसा हूँ वैसा तुम्हारे सामने हूँ। नौट बेड, राईट?

टीचर आपको कैसे पता चला कि मुझे...

सभी विद्यार्थियों के पिछले साल के पेपर देखे। सब से ज्यादा गलतियाँ तुम्हारे पेपर में थीं। मुझे अपना भूतकाल याद आ गया। मेरी जैसी ही उलझनें और घोटाले... मुझे लगा कि "चलो मेरे बचपन से बातें करूँ।"

दोनों की आँखें छलक गईं।

उस दिन के बाद अंश ने पीछे मुड़कर नहीं देखा, टीचर की हूँफ और पूर्ण विश्वास के साथ उसने बहुत मेहनत की।

कुछ सालों के बाद...

कलाक्षेत्र में योगदान का यह सम्मान मैं अपने टीचर को समर्पित करता हूँ। उन्होंने ही मुझे मेरी पहचान करवाई थी। मुझे इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स से बाहर निकालकर, मेरी आतंरिक शक्तियों को खिलाया था।

अंश कमियाँ सभी में होती हैं और खूबियाँ भी। यदि भीतर की खूबियों को नहीं पहचानेंगे तो हमारे साथ ही हमारी खूबियाँ भी चली जाएँगी। जो लोग इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स को हराकर, उभरकर आगे आ सके हैं ऐसे प्रेरणा स्वरूप लोगों को मेरा सलाम।

तालियों की गड़गड़ाहट के साथ हॉल में सभी खड़े हो गए। टीचर के हाथ में ट्रॉफी देकर, अंश ने उनके चरणस्पर्श किए।

दोनों कॉम्प्लेक्सिटी के लक्षण

सुपीरियारिटी

१. मैं कुछ हूँ, ऐसा मानता है
२. अपना चलन चलाता है
३. निर्भय होता है
४. सामने से अटैक करता है
५. बात-बात में उछल पड़ता है
६. मानी होता है
७. एग्रेसिव होता है
८. निर्णय फास्ट ले लेता है
९. तुरंत स्पर्धा करने लगता है
१०. जीवन में सफल होता है

इन्फिरियारिटी

१. मैं सब से छोटा हूँ, ऐसा मानता है
२. भोगवटे में ही रहता है
३. भयभीत रहता है
४. अपनी सेफ साइड ढूँढता है
५. जब उछलता है, तब ज़ोरदार उछलता है
६. अपमान का भय लगता है
७. डिप्रेसिव होता है
८. निर्णय लेने में डगमगाता है
९. स्पर्धा नहीं करता
१०. जीवन में आगे आता ही नहीं है।

चार्ल्स स्कवोब

चार्ल्स स्कवोब एक बड़ी कंपनी के मैनेजर थे। लाखों डॉलर की उनकी वार्षिक कमाई थी। उन्हें इतनी बड़ी तनख्वाह क्यों मिलती थी? उसकी वजह यह थी कि उन्हें मानव संबंध सँभालना और विकसित करना बहुत अच्छी तरह आता था। बड़े पद पर होते हुए भी उन्हें किसी सुपीरियारिटी का दंभ नहीं था।

एक दिन दोपहर के समय, चार्ल्स अपनी स्टील मिल में काम कर रहे थे। उनकी नज़र कुछ युवकों पर पड़ी। वे "नो स्मोकिंग" बोर्ड के पास खड़े होकर सिगरेट पी रहे थे।

अपनी सुपीरियारिटी और सत्ता का फायदा उठाकर, चार्ल्स उन युवकों से कह सकते थे कि, "आप बोर्ड नहीं पढ़ सकते?"

लेकिन नहीं, उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा। उन्होंने उन युवकों के साथ थोड़ी मित्रतापूर्ण बातें की। धूम्रपान की मना होते हुए भी वे उस जगह धूम्रपान कर रहे थे। उस बारे में उन्होंने कोई उल्लेख नहीं किया। जाते समय हँसते चार्ल्स ने कहा, "दोस्तों सिगरेट यहाँ नहीं पीओगे तो मुझे ज्यादा अच्छा लगेगा।"

बस, चार्ल्स ने इतना ही कहा और युवक समझ गए कि उन्होंने स्टील मिल का नियम तोड़ा है। उन्होंने तुरंत सिगरेट फेंक दी।

युवकों को चार्ल्स के लिए बहुत आदर था। उनको यह सीखने मिला कि नम्रता से कैसे व्यवहार करना चाहिए।

जीवंत उदाहरण

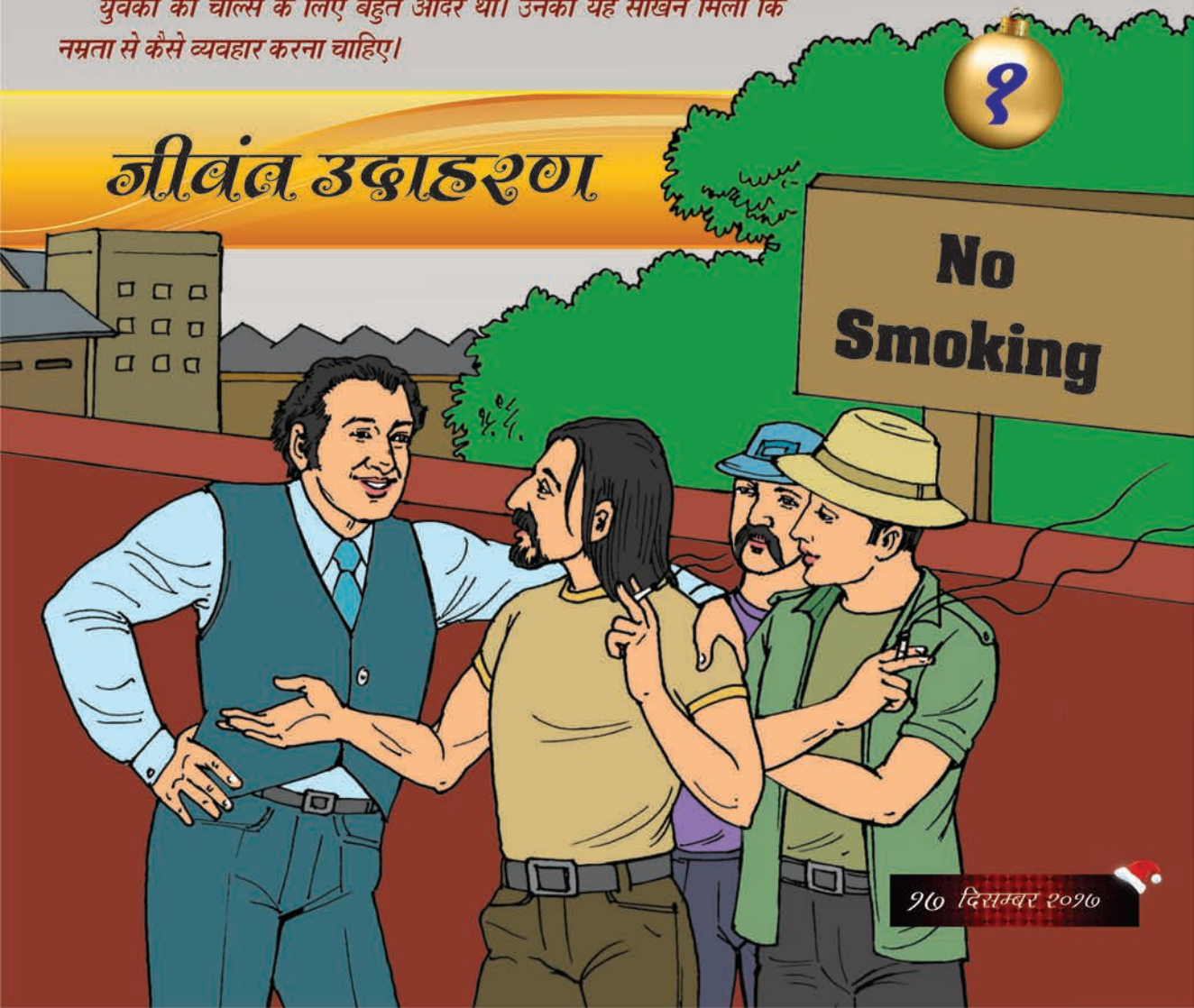

महात्मा गाँधी जी

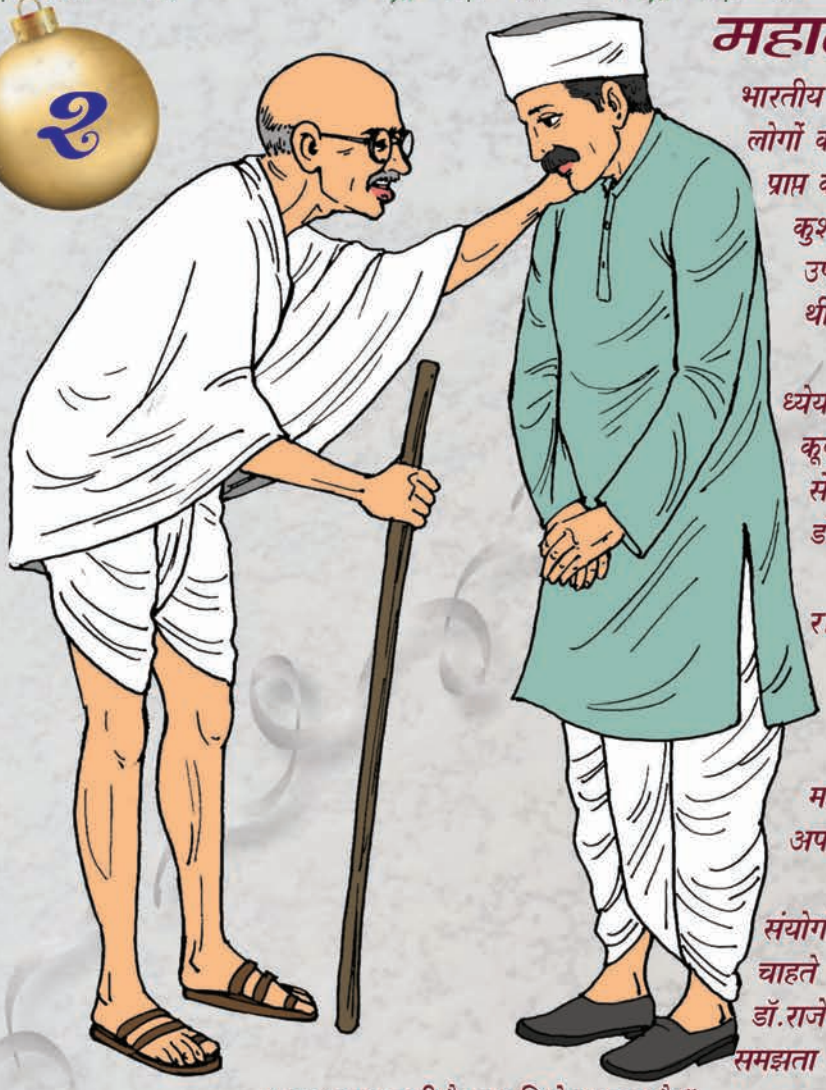

भारतीय प्रजा की नब्ज को परख लिया था। लोगों को इकट्ठा करना, सभी का सहकार प्राप्त करना और हर एक की शक्ति और कुशलता को पहचानकर उसका योग्य उपयोग करना, यह उनकी योग्यता थी।

उनके नेतृत्व में सभी एक ही ध्येय के लिए सर्वस्व छोड़कर संग्राम में कूदने के लिए तैयार हो गए थे। उनमें से एक थे भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्रप्रसाद।

एक बार ऐसा हुआ कि डॉ. राजेन्द्रप्रसाद के एक पुराने सहकार्यकर्ता ने उनसे कुछ कठोर शब्द कहे। डॉ. राजेन्द्रप्रसाद के लिए यह अपमान असह्य था। वे महात्मा गांधी के पास गए और उन्हें अपना त्यागपत्र दे दिया।

"कोई भी स्वमानी व्यक्ति इन संयोगों में वही करता जो आप करना चाहते हो।" गांधी जी ने शांति से डॉ.राजेन्द्रप्रसाद से कहा, "मैं आपकी स्थिति समझता हूँ लेकिन मुझे आपके साथ कुछ अलग बात करनी है, कुछ विशेष कहना है।"

"वह क्या है बापू?"

मेरे सभी सहकार्यकर्ता जो हैं, उनमें एक व्यक्ति ही ऐसा है जो ज़हर का कटोरा पीने में समर्थ है। मानवजाति के कल्याण के लिए देवाधिदेव शंकर ने विषपान किया था। मेरा वह साथी राजेन्द्रबाबू, आप हो।" गांधी जी के शब्द सुनकर राजेन्द्रबाबू ने त्यागपत्र फाड़ दिया।

और इस तरह किसी की सुपीरियारिटी से आहत राजेन्द्रबाबू को गांधी जी ने स्नेह और समझदारी से उसमें से बाहर निकाला।

सभी के सुपीरियर होते हुए भी गांधी जी में किंचितमात्र भी सुपीरियारिटी का अहंकार नहीं था। और इसीलिए उनके व्यक्तित्व में चुंबकत्व था।

सन १९९७ की बात है। नीरू माँ का सत्संग मुंबई के नालासोपारा विस्तार में आयोजित किया गया था।

नीरू माँ को सत्संग स्थल पर ले जाने की सेवा, आप्तपुत्र ने एक भाई को सोंपी थी। आप्तपुत्र ने उन भाई को दोपहर के करीब साड़े तीन बजे नीरू माँ को लेकर आने के लिए कहा था।

दूसरे दिन उन भाई को ऑफिस में बहुत काम आ गया और वे नीरू माँ को लेने नहीं जा पाए। अपमान के भय से यह बात उन्होंने आप्तपुत्र को भी नहीं बताई।

शाम के करीब सात सवा सात बजे वे भाई नालासोपारा सत्संग में पहुँचे। नीरू माँ का सत्संग शुरू हो गया था।

कुछ देर बाद, आप्तपुत्र उन भाई के पास आकर बैठे।

आप्तपुत्र ने भाई से पूछा, "कितने बजे आए?"

भाई ने कहा करीब सात सवा सात बजे।"

यह सुनकर, उन आप्तपुत्र को धक्का लगा। उन्होंने पूछा, "फिर नीरू माँ किसके साथ आए?"

भाई ने कहा, "आप ले आए होंगे न?"

आप्तपुत्र ने कहा, "लेकिन मैं तो तुम्हारे आने के बाद आया हूँ।"

यह सुनकर उन भाई को बहुत घबराहट हुई, "तो फिर नीरू माँ सत्संग में किसके साथ आए होंगे?"

सत्संग पूरा होने के बाद पता चला कि नीरू माँ अकेले ट्रेन में आए थे। बॉम्बे की भरचक ट्रेन में नीरू माँ खड़े-खड़े सत्संग स्थल पर पहुँचे थे।

जब सत्संग पूरा हुआ तब नीरू माँ ने तुरंत ही आप्तपुत्र को बुलाकर कहा, "उन भाई से एक शब्द भी नहीं कहना है।" नीरू माँ सभी की प्रकृति से परिचित थे। आप्तपुत्र की प्रकृति स्ट्रोंग थी और उन भाई की नरम।

नीरू माँ को इतना कष्ट होता यदि आप्तपुत्र ने उन भाई को डाँट दिया होता तो, उन भाई का अहंकार बिल्कुल ही भग्न हो जाता। वे भाई टूट न जाएँ इस तरह नीरू माँ ने पूरी परिस्थिति को सँभाल लिया।

ज्ञानी की कैसी अद्भुत एडजस्टमेन्ट कला। अपना किंचितमात्र भी विचार किए बिना, सभी का प्रेम से जतन करते हैं।

Akram Express
December 2017
Year : 5, Issue : 9
Conti. Issue No.: 57

BALVIGNAN
Fun 'n' Gyan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** *और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा.* **AGIA4313##** *अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।*

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** *करें।*

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, *२.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मेगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।*

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published